Department of political science

D.B. College Jaynagar

By- A.K. YADAV
Asstt prof. Govt.

B.A. Part-III pol. Ad.

Lecture-13

Date- 14/09/2020

चतुर्थ-चरण (1948-1970) - पहचान का संकट

लोक प्रशासन के विकास में तीसरे चरण के प्रहारों के फलस्वरूप द्वितीय चरण की सिद्धान्त वादी विचारधारा अविश्वसनीय प्रतीत होने लगी रावर्ट डहल की आलोचनाओं के बाद इसका वैज्ञानिक स्वरूप भी खोखला पड़ गया तथा वाद विवाद का विषय बन गया इस प्रकार लोक प्रशासन के चौथे चरण का इतिहास संकटकाल का रहा है। इस संकट की अवस्था से मुक्ति पाने के लिये इस चरण में लोक प्रशासन के विद्वानों ने मोटे तौर पर दो रास्ते अपनाये। एक प्रयास द्वारा यह राजनीति शास्त्र की ओर उन्मुख हुआ जहाँ इसका महत्व बिल्कुल गौड़ हो चुका था क्योंकि यह राजनीति शास्त्र से अपने को पृथक कर चुका था इसी बीच में लोक प्रशासन को राजनीति शास्त्र के साथ मिलने में सौतेले पन का अनुभव तथा उससे अलग अपने को रखने मे अकेला पन था क्योंकि व्यवहार वादियों द्वारा उसके सिद्धान्तों को प्रभावहीन बना दिया गया। दूसरे प्रयास में कुछ विद्वानों ने लोक प्रशासन को निजी प्रबन्धों के साथ जोड़कर प्रशासनिक विज्ञान बनाने का प्रयास किया। इन ~~विद्वानो~~ विद्वानों की यह मान्यता थी की प्रशासन चाहे दफ्तरों में हो या कारखानों में ~~[illegible]~~ दोनो ही क्षेत्र में यह प्रशासन ही है। इस प्रयास के अन्तर्गत 1956 में Administrativ science quarterly नाम पत्रिका का प्रकाशन शुरु किया गया इस प्रयास में भी लोक प्रशासन को अपना नीजि स्वरूप गवाना पड़ा।

Scanned with CamScanner

को प्रबन्ध विज्ञान की ओर उन्मुख रहना पड़ा इस तरह दोनो ही प्रयासों के बावजूद लोक प्रशासन के स्वरूप का संकट मौजूद रहा है।

पंचम चरण 1971 से वर्तमान समय तक -

यह स्पष्ट है कि चतुर्थ चरण के संकट में लोकप्रशासन विषय के विकास में अनेक चुनौतियां पेश की जो इसके लिये बहुत बड़ा वरदान सिद्ध हुआ। अनेक शाखाओं के विज्ञान का समावेश होने से उसके विकाश में में सर्वांगिण उन्नति हुई। राजनिति शास्त्र के विद्यार्थी ही सदैव ही लोकप्रशासन में रुचि लेते रहे है। इसके साथ साथ अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान समाजशास्त्र मानवशास्त्र आदि शास्त्रो के विद्यार्थी भी इस विषय में रुचि लेने लगे। इन सबके प्रयत्नों के फलस्वरूप लोक प्रशासन अन्तर्विषयी बनाया लोक प्रशासन के विषय के रूप में विकाश अन्तिम एवं पाचवां चरण 1971 से अबतक माना जाता है। परन्तु इस चरण में लोक प्रशासन की विषय की प्रवृति 1990 से अलग प्रतित होती है। उसके मूल में वैश्विकरण का प्रभाव कहा जायेगा। अब लोक प्रशासन की प्रकृति प्रबन्ध या management से अधिक घनिष्ट हो गयी है। यही कारण है की कुछ विद्वान 1990 के वैश्विकृत अवस्था के प्रभाव में लोक प्रशासन के विकासात्मक प्रवृतियों का अध्ययन करना चाहते है।

Scanned with CamScanner